ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय- हिन्दी

दिनांक–15/07//2020 'सोना'

महादेवी वर्मा

卐~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~卐

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो!

आज पुन: कहानी को आगे की ओर ले चलते हैं।
~~~~~~~~~~

एन सी इ आर टी पर आधारित

सोना

___महादेवी वर्मा

अनेक विद्यार्थियों की भारी-भरकम गुरु जी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगायी थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की **अभिव्यक्ति** के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक लगेगा, तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए संभव नहीं था।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने वह गद्गद होकर निकट आ जाता है और क्रोध

करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है। परंतु हिरन यह अंतर जानता अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा, मानों पूछता हो, क्या यह उचित है! वह केवल स्नेह पहचानता है जिसकी स्वीकृति बताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

मेरी बिल्ली गोधूलि, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुतिया फ्लोरा, सबसे पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे **सख्य** स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते और बिल्ली उस पर उछलते-कूदते रहते। को उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के **पीताभ**

रोएं **ताम्रवर्णी** झलक देने लगे। टाँगे अधिक सुडौल हो गयी और खुरों के कालेपन में चमक आ गयी। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गयी। पीठ में भरावावाला उतार-चढ़ाव और स्निगधता दिखाई देने लगी परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानों नीलम के बल्वों में उजली विद्युत का **स्फुरण** हो।

इस बीच फ्लोरा ने भक्तिन की अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गयी। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसको इतने लघु जीवों से घिरा देख उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गयी।

क्रमशः

शब्दार्थ-:

- अभिव्यक्ति =मन की बात प्रकट करना
- सख्य = दोस्ती
- तन्मय =मगन
- पीताभ =पीला
- ताम्रवर्णी =ताँबे के रंग जैसा
- बंकिम =टेढ़ा,तिरछा
- स्निग्धता =चिकनापन
- स्फुरण =संचरण

छात्र कार्य-:

1. कहानी का शुद्ध- शुद्ध वाचन करें।
2. शब्दार्थ लिखिए एवं याद करिए।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"